भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 18 अंक : 9 | **मंगलवार, 26.9.1995** | **वार्षिक चंदा : 50.00**

ब्रह्मप्रवाह

संवत् 2030 की मंगल प्रभात....
सभी सत्संगी बंधुओं के प्रति...

'अर्थं साध्यामि वा देह पातयामि' इस प्रकार चैतन्य यदि उत्तम पुरुष के प्रसंग से लड़ पड़े और उसके वचन से प्रभु की स्मृति करते-करते यदि लगनी लगा दे, तो देह रहते हुए ही अखंड शांति, सुख, बल व आनंद प्राप्त होगा ही। यह रहस्य गुरुदेव योगीजी महाराज ने केवल कृपा करके सभी जीवों के हित के लिए सदा सुखी होने के लिए सदैव के लिए कायम रख दिया। तो, इस नूतनवर्ष से सभी आध्यात्मिक संकल्प दृढ़ करके शुद्धभाव से व प्रमाणिकता से जीव अपना प्रतिकूलभाव, आडंबर, दंभ, दिखावा, कल्पना और झूठा अहं सदंतर छोड़कर, सुहृदभाव के राजमार्ग पर सत्संग में आत्मबुद्धि का समागम करे तो दिव्यानंद प्राप्त करने का सुन्दर सर्वोपरि परिणाम तत्काल आसान बन जाए।

मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी ने सुखी होने के अलग-अलग निम्न प्रकार बताए हैं। परन्तु जब तक रमणीय विषय में आसक्ति होगी

या

बड़ों की आज्ञा में वर्ता नहीं जाता होगा

और

मनधारा करने की आदत होगी

या

मूल अज्ञान की आदत होगी,

तब तक व्यासजी जैसे को भी शांति नहीं हुई, तो दूसरों को तो कहां से होगी? और फिर आज तो सभी प्रकार की सुविधा है, लेकिन हम अपनी गफलत और जड़ता के कारण स्वरूपज्ञान होने के बावजूद भी छोड़ नहीं पाते। अनादिकाल से हृदयग्रंथि के समान मूल अज्ञान की ये दुःख की, व्यथा की, ग्लानि की, क्षोभ की, उलझन की, अवगुण होने की, अवगुण लेने की, दूसरों का ही देखने की, उपदेश करने की और समझा देने की ग्रंथि हमारे जीव के साथ ऐसा रसरूप हो गई है कि बड़े पुरुष वह टालने और सम्पूर्णतया दूर करने कृपा करते हैं, जब उस कनकी को पिघालने ताप देते हैं तब चिल्ला-चिल्ला कर, रो-धोकर, खूब दुःखी हो जाकर-बहाने निकाल कर और आखिरकार अपने आपसे धोखाधड़ी करके बड़ों को मोहताज़ कर देते हैं। तो अब, निम्न कोई भी एक प्रकार को पकड़ कर देह रहते ही सुखी होने का मार्ग अपना कर, उसके लिए की साधना का अतिक्रमण करके गुरुकृपा से सभी सुखी-बनो यही अंतर की अभ्यर्थना !

1. श्रीजी स्वरूप गुणतीत संत में प्रकट का भाव लाकर

जुड़ जाना।

या

2. वच. अंत्य. 11 के मुताबिक दो अच्छे साधु और चार अच्छे सत्संगी के साथ दृढ़ आत्मबुद्धि करनी।

या

3. माहात्म्यज्ञानसहित निष्कामभक्ति करनी-यानि की धाम, धामी और मुक्तों को आगे रखकर भक्ति करनी।
4. सद्विचार से और शुद्धभाव से ध्यान और भजन करना यानि कि शुबह-शाम नियमित स्वरूपयोग करके सत्कर्म करना।

या

5. सच्चे निष्कामी व ज्ञानी होना।

या

6. प्र. 4 की 140वीं बात के मुताबिक भगवान और भगवान् के भक्तों के गुण ही गाना और सुनना।

या

7. मूढ़ता से ठहरावरहित वर्त कर बड़ों की प्रसन्नता के लिए सेवा-भक्ति करा करनी।

या

8. सम्पूर्ण निराधार होकर केवल बड़ों के चरणों में पड़े रहना और जो कहें, करने की कोशिश करा करनी।

तो, अब ऊपर में से जो तुम्हें जमे, वह एक का अतिक्रमण करके लगनी लगाना। परन्तु, हमें सच में सुखी होना ही नहीं है और उदासीनता में हमें आनंद आता है। लेकिन, मूर्खपने का-अज्ञानता का-यह प्रकृतिपुरुष के अंदर के नरक का आनंद छोड़कर, यदि शुद्धभाव से लग पड़ोगे तो जरूर निश्चित परिणाम आएगा ही। महाराज और स्वामी सभी को अमाप बल दें यह प्रार्थना! देह रहते हुए ही अक्षरधाम का सुख सभी को प्राप्त हो-यही अभ्यर्थना !

लि. तुम्हारे ही दादुभाई के नए वर्ष के खूब ही हेतपूर्वक जय श्री स्वामिनारायण !

✡✡✡✡✡

ओ हो ! महामंगलकारी दिनों की श्रृंखला.........

अहो हो ! गुणातीत परम्परा के कितने ही महामंगलकारी दिनों की श्रृंखला, आनंद व खुशी के पर्व एक साथ आ रहे हैं.... आशीर्वाद मांगने के दिन, पिछले साल का लेखा-जोखा करके जहां चूके हों वहा अंतदृष्टि करके आगे बढ़ने के मौके, गुणातीत स्वरूपों के जीवन को आदर्श रखकर जीने की उमंग, उत्साह से उनके लिए मर मिटने की-उनकी योजना में याहोम होने कृतनिश्चयी होने का दृढ़ संकल्प, दशहरा-शरद्पूर्णिमा, दीपावली व नूतन वर्ष जैसे मंगल अवसर आ रहे हैं......

दशहरा :

इंद्रिय-अंतःकरण पर विजय पाने की प्रार्थना, प्र.ब्र.स्व. प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी का पार्षदी दीक्षा दिन.....

शरद्पूर्णिमा :

महाराज के अखंड रहने का धाम-मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामीजी का प्रागट्यदिन, प्र.ब्र.स्व. हरिप्रसादस्वामीजी का भागवती दीक्षा दिन—जिन्होंने आज अपने अविरत परिश्रम तथा विशाल कार्यों द्वारा गुरुहरि योगीजी महाराज को जीवंत रखा है !

दीपावली–नूतन वर्ष :

दिव्य प्रकाश पाने की जाग्रतता तथा नित्य नवीन उमंग-उत्साह से प्रगट स्वरूप को प्रसन्न करने की तीव्र भावना....

अनेक जीवों को माया से परे करके, ब्रह्मस्वरूप बनाकर परब्रह्म की भक्ति करने श्रीजी महाराज के अवतरण का दिव्य हेतु तो था ही और धरती पर भगवान के प्रगट स्वरूप के प्रति भक्ति का अनुपम आदर्श स्वामिश्री ने अपने वर्तन द्वारा रखा तथा मूर्तिमान अमर गुणातीत भावना के रूप में युगों-युगों तक पीढ़ियों की प्रेरणामूर्ति बने। आत्मनिष्ठा, स्वरूपनिष्ठा, स्वधर्म, साधुता के गुण पराकाष्ठा पर होते हुए भी केवल महाराज की मूर्ति में पल-पल

निमग्न रहना वह थी स्वामिश्री की अनोखी जीवन पद्धति व विशेषता। आज भी स्वामिश्री के महाराज के प्रति प्रसंग-आधी रात को बरसात में महाराज के दर्शन के लिए खड़े रहना, दर्शन के लिए उल्टे पांव घोड़ी के साथ-साथ दौड़ना, धूप में 30 संतों के जूतों की गठरी सिर पर रखकर चलना, 18 बीमार साधुओं की सेवा में अकेले तत्पर रहकर अहोभाव से लगे रहना.... प्रत्यक्ष स्वरूप के प्रति कल्पना से परे की प्रीति रखकर, उसके अभिप्राय की भक्ति में स्वयं को विलीन कर देना-यह आदर्श सर्वप्रथम स्वामिश्री ने रखा !

हम सभी जानते हैं कि मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी स्वंय महाराज का अखंड रहने का धाम, परब्रह्म के अखंड धारक थे और वैसी ही अद्‌भुत सामर्थ्य धारे हुए थे। निम्न प्रसंग उनके परभाव की भूमिका, अद्‌भुत सामर्थ्य का दर्शन करा जाते हैं जैसे कि—

यह आकार साधु का दिखाई देता है लेकिन हैं तो महाराज

जूनागढ़ मंदिर की धर्मशाला में जो सभामंडप है उसके मुख्य द्वार की दक्षिण दिशा में स्वामिश्री के नहाने की चौकड़ी थी। एक दिन स्वामिश्री धोती पहन रहे थे। उस समय बालमुकुंदस्वामी और कोठारी त्रिकमदास वहां खड़े-खड़े स्वामिश्री के दर्शन कर रहे थे। उन्हें देखकर उनके सामने हँसकर स्वामिश्री बोले—**‘तुम्हें तो प्रगट भगवान साक्षात् मिले हैं इसलिए अब तुम्हें कुछ करने का रहा नहीं। जैसे तुम्हारे देह में जीव रहा है वैसे हमारे में महाराज साक्षात् रहे हैं, वे तुम्हारी ओर दृष्टि करके देखते हैं, तुम्हारे माथे पर हाथ रखते हैं, तुम्हें मिलते हैं। यूं सुख देते हैं, इतना ही फर्क है। लेकिन हैं तो साक्षात् महाराज ! पर तुम महाराज के प्रगट स्वरूप को पहचान सकते नहीं।’**

इस प्रकार स्वामिश्रीजी ने इन दोनों शिष्यों को स्वयं के स्वरूप की पहचान कराने दया करके बात करी और मर्म में समझाया कि वे स्वयं साक्षात् अक्षरधाम हैं जिसमें महाराज सर्व प्रकार से अखंड रहे हैं।

जूनागढ़ में रामप्रतापभाई को रणछोड़राय का दर्शन

स्वामिश्री वरताल चैत्र पूर्णिमा का उत्सव करके जूनागढ़ पधारे। महाराज के बड़े भाई रामप्रतापभाई द्वारिका की यात्रा करने जूनागढ़ आए। उन्होंने पहले महाराज के स्थूल रूप से होते हुए भी दो बार तो द्वारिका की यात्रा करी थी। फिर भी परोक्ष के तीर्थ की अति महिमा जीव में होने से तीसरी बार यात्रा करने फिर से आए।

स्वामिश्री उन्हें देखकर बहुत ही खुश हुए। उनके ठहरने करने की अच्छी व्यवस्था करी और सेवा करी। तीसरे दिन उन्होंने स्वामिश्री को कहा—‘स्वामी ! द्वारिका में रणछोड़राय विराजते हैं, सो दर्शन करने के लिए जाना है।’ स्वामिश्री उनके भोलेपन के ये वचन सुनकर हँसे। फिर कहा—‘बड़े भाई ! तुम्हारे जो भाई हैं, वे ही महाप्रभु हैं। उन्होंने रणछोड़राय को यहीं पधराया है। इसलिए वहां क्यों जाना पड़े?’ स्वामिश्री के ऐसे प्रेम भरे वचन सुनकर उस समय तो उन्होंने कहा—‘ठीक है।’ परन्तु दूसरे दिन फिर सामान बांधकर तैयार हो गए और स्वामिश्री के पास आए। तब स्वामिश्री ने उनको कहा—‘भले ही तुम्हें द्वारिका जाना हो तो खुशी से जाओ। परन्तु अभी श्रृंगार आरती होगी, उसके दर्शन करके जाओ। यहां रणछोड़जी की मूर्ति में तुम्हारे हरिकृष्ण अखंड रहते हैं। सो प्रथम उनके दर्शन करके फिर द्वारिका जाना। तुम जिसके दर्शन के लिए द्वारिका जा रहे हो, वे तो तुम्हें यहीं दर्शन देंगे।’ सुनकर रामप्रतापभाई ने कहा—‘तब तो बहुत अच्छा।’

इतने में श्रृंगार आरती हुई। बड़े भाई स्वामिश्री के साथ दर्शन करने गए। रणछोड़राय की मूर्ति के बहुत ही प्यासे नैनों से दर्शन करे। इतने में तो उस मूर्ति में से

घनश्याम महाराज प्रकट हुए और बड़े भाई को गले लगे। फिर उनको कहा—'बड़े भाई ! हम तो यहीं रहते हैं और तुम और कहीं क्यों जाते हो?' परन्तु रमप्रतापभाई तो स्थिर दृष्टि से दर्शन करते ही रहे। उनकी आंखों में से आंसू की धारा बह चली। गद्‌गद् कंठ से महाराज की स्तुति करने लगे। स्वामिश्री यह सब हंसते-हंसते देख रहे थे। फिर महाराज अदृश्य हो गए और रामप्रतापभाई होश में आए। उन्होंने स्वामिश्री की ओर देखकर कहा—'स्वामी ! हमको दर्शन हो गया। घनश्याम गले लगे। इसलिए द्वारिका की यात्रा को हम तो यहीं मानकर रहेंगे।' यूं कह कर आनंद में आकर कम्मर रवेस छोड़ दिया।

फिर स्वामिश्री ने उन्हें धीरे से समझाया, 'बड़े भाई ! अपना तो सब कुछ यहीं है। सो और कहीं भटकने की-घूमने जाने की जरूरत नहीं। सर्वोपरि स्वामिनारायण भगवान हमें मिले, वे साक्षात पुरुषोत्तम नारायण मिले हैं...'

घनश्याम महाराज की महिमा की यह बात सुनकर रामप्रतापभाई अत्यंत खुश हुए। फिर उन्होंने कहा—'स्वामी ! घनश्याम की महिमा हम ऐसी नहीं समझते थे। आपने आज बहुत दया करके महिमा समझायी।' यूं कहकर रंग में आ गए....

लेकिन सबसे अधिक आश्चर्य की बात यह थी कि स्वयं इतने अधिक समर्थ होते हुए भी स्वामिश्री ने अजोड़ स्वामीसेवकभाव रखकर साधुता का अजोड़ परिचय दिया.... सच ! गुणातीत जैसा कोई सेवक नहीं, आदर्श नहीं... साकार ब्रह्म के अवतार समान गुरु गुणातीत कैसे अद्‌भुत सेवक बनकर वर्ते..... अगर उनके सेवकभाव के प्रसंगों का विचार सही अर्थ में करेंगे तो सच्चा सत्संग करने में देशकाल नहीं लगेगा। निरन्तर वृद्धि को पाएंगे.... 24 घंटे सेवा की ही उमंग रहेगी.... स्वामिश्री को सेवा की कितनी उमंग होगी कि एक सामान्य सेवक की अदा से बैलगाड़ी के कोचवान तक बने-उनका यह प्रसंग निहारें...

स्वामिश्री गोपालानंदस्वामी की बैलगाड़ी हांकते हैं

चैत्र पूर्णिमा का उत्सव करके स्वामिश्री व गोपालानंदस्वामी वरताल से जेठ मास में निकले। वरताल से घूमते-घूमते सारंगपुर पधारे। फिर बोटाद होकर गढडा पधारे। यहां आने के बाद गोपालानंदस्वामी की तबियत अस्वस्थ हो गई। परन्तु स्वामिश्रीजी के साथ जूनागढ़ जाना था इसलिए गोपालानंदस्वामी ने सहज ही कहा—'यह काठियावाड़ की पथरीली भूमि में बैलगाड़ी का सफर मुझसे हो नहीं पाएगा। इसलिए किसी को यदि बैलगाड़ी अच्छी चलानी आती हो तो आराम से जूनागढ़ पहुंचा जाए।' स्वामिश्री ने तुरंत ही कहा—'स्वामी ! मुझे अच्छा हांकना आता है। इसलिए आपको बैलगाड़ी में गद्दा बिछाकर सुलाएंगे और बैलगाड़ी ऐसी चलाऊंगा कि गड्डो-खड्डों का पता ही नहीं चलेगा। गोपालानंदस्वामी स्वामिश्री के ये मधुर वचन सुनकर अत्यंत प्रसन्न हुए। भगवान का अपने भक्त के प्रति का अपूर्व प्रेम दर्शाता ऐसे प्रसंग का इतिहास में प्रथम श्री कृष्ण ने अर्जुन का सारथी बनकर दिखाया। फिर श्रीजी महाराज ने दादाखाचर का रथ हांका और भटवदर दादाखाचर की शादी कराने पधारे। आज वही इतिहास का पुनरावर्तन स्वामिश्री ने स्वयं के परमप्रिय सखा और स्वयं की महिमा प्रर्वताने वाले गोपालानंदस्वामी का सारथी बनकर बताया। गोपालानंदस्वामी को बैलगाड़ी में सुलाया। स्वामिश्री बातें करते जाएं और बैलगाड़ी चलाए। गोपालानंदस्वामी
प्रेमपूर्वक स्वामी की बातें सुने और उस लीला का ध्यान करें। गढडा से निकलकर प्रथम मेंगणी पधारे। यहां के दरबार मनभा से बात करी। उसको सत्संग कराया। फिर मेंगणी से निकलकर मेवासा पधारे। यहां कथावार्ता दर्शन और सेवा का सम्पूर्ण सुख लिया और थोड़े दिन रुककर दोनों सद्‌गुरु जूनागढ़ पधारे।'

यहां गोपालानंदस्वामी चार महीने रुके। स्वामिश्री के मूल अक्षर स्वरूप की खूब बातें करी। जन्माष्टमी के उत्सव की सभा में बातें करते गोपालानंदस्वामी ने

कहा—'वरताल में चार आनी और गढडा में आठ आनी की बातें होती हैं। लेकिन पेट भरकर पूरी-पूरी बातें तो जूनागढ़ में होती हैं। यूं प्रसंग-प्रसंग पर गोपालानंदस्वामी, स्वामिश्री के मूल अक्षर स्वरूप को पहचानने चूकते नहीं।'

कैसा अजोड़-अद्भुत आदर्श स्वामिश्री ने हम सबके लिए रख दिया... और उसी गुणातीत परम्परा के वारिसदार गुरुहरि योगीजी महाराज द्वारा दिया निम्नलिखित साधना का मैग्नाकार्टा रूप 'गुणातीत ज्ञान का नवनीत' जो साधना पथ के लिए खूब मननीय है.....

- **किसी के दोष नहीं देखना।**
- **स्वयं का कर लेना।**
- **उदासी, परेशानी आए तो भजन का उपाय लेना, परन्तु दूसरे कोई विचार नहीं करना...**
- **हर एक में निर्दोषबुद्धि रखनी।**
- **संप, सुहृदभाव व एकता रखनी।**

साक्षात् प्रगट-स्वरूप की महिमा निरंतर गाया करनी।

आईए, इन मंगलकारी दिनों में भगवान स्वामिनारायण व सर्व गुणातीत स्वरूपों के चरणों में प्रथम करें कि ये 6 सूत्रों की ओर हमारी सतत् दृष्टि रहे। नए वर्ष में नए उत्साह, उमंग से, भजन, प्रार्थना, सेवा, समागम-हर एक प्रवृति आपकी मूर्ति में रहकर करने का बल, बुद्धि व प्रेरणा देना... नव वर्ष की एक-एक पल सभी को मंगलमय हो और दीपावली-दिव्य प्रकाश की ओर अग्रसर हों... यही प्रार्थना !

✡✡✡✡✡

स्वामी की बातें

454. विषय से हार-तो एक पुरुषोत्तम और उसके एकांतिक साधु ये दोनों की ही नहीं होगी वर्ना और कोई तो विषय से निर्लेप रह ही नहीं पाएगा। सो विषय से दूर ही रहना और भगवान् के साथ रहना तथा देह को तो अपना रूप मानना ही नहीं। देह को अपनी मानें उसमें सभी दुःख रहे हैं और देह को न गिने तो दुःख ही नहीं।

प्र.-5,250

455. पुरुषार्थ तथा प्रवृत्ति करने से अकल्याण नहीं होता; वह तो करना, लेकिन पापी का संग नहीं करना...

प्र.-5,251

456. महाराज थे तब भी वे जैसे थे वैसे नहीं पहचाने गए तथा रघुवीरजी महाराज और बड़े-बड़े साधु थे, वे भी जैसे थे वैसे पहचाने नहीं गये। पीछे से बखान होता है। फिलहाल भी जैसे हैं वैसे साधु पहचाने नहीं जाते। नारायण भक्त ने पूछा कि-भगवान् जैसे हैं वैसे पहचाने जाए तो समास नहीं हो, उल्टी हानि होगी-विरोध होगा। महाराजा ने जैसी है वैसी जब बात करी तो सभी ने नियम-प्रण छोड़ दिए। तब महाराज ने कई वचनामृत निकलवा दिए और कहा कि एक भी वचनामृत रखना नहीं है। फिर नित्यानंदस्वामी ने प्रार्थना करके कहा कि-धर्मामृत तथा शास्त्र की मर्यादा को रखते हुए जो होंगे, वे ढूंढकर लिखेंगे। तब जाकर इतने रहने दिए। इसलिए जैसी है वैसी पहचान दे तो समास नहीं होगा। सो यूं समझना कि जो महाराज ने किया है वह हमारी भलाई के लिए ही किया है, वर्ना अन्यों की तरह अपना हो जाए। उनमें और हममें फर्क रहे नहीं।

प्र.-5,252

457. सत्संगी जैसा है वैसा पहचाना नहीं जाता, साधु जैसे हैं वैसे पहचाने नहीं जाते और जीव को स्वयं का तो ख्याल नहीं कि मुझे कैसे समर्थ मिले हैं? त्यागी होकर सिर पर टोपी डाल दी उसमें क्या सुधरा? भगवान और बड़े संत का रहस्य तो समझ नहीं पाते। रहस्य तो यह है कि ब्रह्मरूप होकर प्रीति करना और ये तो सनकी हो गए हैं। त्याग की सनक लग जाए, आसक्ति पर चढ़ जाए

और गप्पे मारने लग जाए, लेकिन जब तक रहस्य समझेंगे नहीं तब तक क्या सुधरा? और माने कि मैं मेरा अच्छा कर लूंगा। परन्तु वह तो बड़े करेंगे, तो ही होगा। महिमा तो ऐसी है कि पंच महापाप जल जाए और काला सर्प ने काटा हो तो ज़हर चढ़े नहीं, यदि सच में विश्वास हो और पिछले साल बिना बरसात के दाने उगाए हैं।

प्र.-5,253

458. विषय का अंत आए, ऐसा नहीं। तब सुतार माधाभक्त ने पूछा कि वे निर्मूल कैसे हो? तब बोले कि–जिसके निर्मूल हुए हों उसके संग से ज्ञान हो, वैराग हो, विवेक आए और आत्मा तथा देह पृथक माने तो निर्मूल हो जाए। शुकजी, जड़भरत, जनक, अंबरिष उनके विषय निर्मूल हुए जानना। नदी का, ऋषि का, स्त्री का और विषय का अंत कभी ढूंढना नहीं। वेद और शिक्षापत्री के मुताबिक वर्तना तथा बेल ऊपर-ऊपर से भले ही सूख जाए पर यदि मूल में से हरा रह गया तो ऊपर भी हरा हो जाएगा। मूल में से ही काट दिया हो तो टल जाए और क्रिया तो पूर्व के संस्कार के अनुसार होती है–

'कोई कहे हरि हो गए कोई कहे होवत हार;
मुक्त प्रगट की प्रीछ बिन भटकत सब संसार।'

पहले जो हो गए उनके लिए रोते हैं और आगे होंगे उन्हें ढूंढते हैं, परन्तु यह प्रगट है उसे कोई मानता नहीं।

प्र.-5,254

459. राजा तप करने गया तो उसको थाल आता था और एक गरीब तप करने गया तो उसे रोटी मिल जाती थी। तब वह गरीब बोला कि वह तप करता है और मैं भी तप करता हूं, पर मुझे ऐसा क्यों मिलता है? तब कहा कि तुझे घर पर रोटी नहीं मिलती थी, परन्तु तप के प्रताप से रोटी नसीब हुई है और राजा तो थाल छोड़कर आया है, सो उसे थाल देना पड़ता है।

प्र.-5,255

460. यह जीव जब तक भगवान की शरण में नहीं जाता तब तक भले कितना ही करे और देवता बने, ईश्वर बने या चाहे पुरुषादिक के बड़प्पन को पाए लेकिन काल, कर्म, माया, गर्भवास और नरक के कुंड से तरे नहीं और जब तक गर्भवास में आना पड़ता है तब तक नरक के कुंड से कहां बचा है? और भगवान की शरण में जाए तब काल, कर्म, माया, गर्भवास और नरक के कुंड का दुःख उसके माथे से टल जाता है।

प्र.-5,256

व्रतोत्सवसूची

1)	दि.	3.10.95	मंगलवार	दशहरा, प्र.ब्र.स्व. प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का पार्षदी दीक्षा दिन
2)	दि.	4.10.95	बुधवार	एकादशी, व्रत
3)	दि.	8.10.95	रविवार	शरद्पूर्णिमा, मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी का प्रागट्य दिन प्र.ब्र.स्व. प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन
4)	दि.	20.10.95	शुक्रवार	एकादशी, व्रत
5)	दि.	21.10.95	शनिवार	धनतेरस
6)	दि.	23.10.95	सोमवार	दीपावली, लक्ष्मी-शारदा पूजन

PUBLISHED BY PRABHAKAR RAO FOR YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
'ANIRDESH' Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed at : **Chowdhry Mudran Kendra** 12/3, Sri Ram Marg, South Maujpur, Delhi-110 053